International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(3): 35-37

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(3): 35-37
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 17-02-2015
Accepted: 15-03-2015

डॉ0 देवेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी , नैनीताल

Correspondence
डॉ0 देवेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी , नैनीताल

अग्नि पुराण : पशु लक्षण व चिकित्सा

डॉ0 देवेश कुमार मिश्र

वस्तुतः पुराणों के वर्ण्य विषय तो सर्ग / प्रतिसर्ग एक/ वंश / मन्वन्तर / वंशानुचरित आदि ही प्रमुख रहे हैं । अग्नि पुराण का वर्णन भी इससे अछूता नहीं है । पुनश्च इस पुराण में कुछ विशेष है जो अन्यों में नहीं । अग्नि पुराण का प्रतिपाद्य सर्वतोमुखी प्रभावोत्पादक है । वंश वर्णन, स्तवन, लक्षण परिभाषाएँ, कर्मकाण्डीय विधियों का स्पष्टीकरण देव प्रतिष्ठा विधि से लेकर मनुष्य / पशु / चिकित्सा । सिद्ध औषधियॉ आदि का विधिवत वर्णन अग्निपुराण के रचयिता की दृष्टि में हैं । इतना ही नहीं इस पुराण में पशुओं के लक्षण भी दिये गये हैं जो नाना प्रकार से शुभाशुभ माने जाते हैं । हाथी, अश्व, गौ आदि के शुभ लक्षण और उनकी स्वास्थ्य रक्षा के उपाय अग्निपुराण के ही एक वर्णन में बताये गयें है । **इससे यह ध्वनित होता है कि पौराणिक काल में पशुओं पर मनुष्य का केवल आधिपत्य ही नहीं रहा होगा । बल्कि शुभ लक्षणों के आधार पर पशुपालने से लाभ / हानि का विचार किया जाता रहा होगा ।** पशु तो मनुष्य के सर्वथा समीप ही रहा है । प्रथमतः गज लक्षण और गज चिकित्सा के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं जो पालकाप्य व लोमपाद के सम्वादों में इस प्रकार उद्धृत हैं । पालकाप्य ने लोमपाद को समझाते हुए कहा है कि –

गज दीर्घहस्त (शुण्ड) वाले महान उच्छ्वास से युक्त और सहनशील होते हैं, वे प्रशस्त माने जाते हैं । बीस, अठारह नखों वाले और शीत काक में मद च्योतन करने वाले तथा दाहिना दॉत जिनका कुछ उन्नत हो, गर्जन मेघ के समान हो, जिनके दोनों कान बडे. हों तथा जिनके त्वचा में छोटे – छोटे बिन्दु हो ,ऐसे ही हाथियों पर सवारी करनी चाहिए । जो छोटे कद वाले और सुलक्षणों से रहित ,हों उन पर कभी सवारी नहीं करनी चाहिए और न ऐसे गजों को अपने यहॉ पालना ही चाहिए । जिनकी पार्श्ववर्तिनी हथिनियॉ गर्भिणी हों और मूढ गज हों ये अलक्षण वाले गज होते हैं। वर्ण सत्व, बल, रूप, कान्ति सहन, यदि ये सातों लक्षण जिनमें स्थित हों तो ऐसा हाथी सर्वदा युद्ध स्थल में शत्रुओं को जीत लेता है । हाथी शिविर और सेना दोनों की परम शोभा करने वाले हुआ करते हैं । राजा की विजय हमेशा हाथियों के द्वारा ही आदर वाली होती है । हे द्विज पाण्डु रोगों में गोमूत्र दोनों तरह की हल्दी से घृत तैल से सिक्त उसके आनाह पर निषेक करना प्रशस्त कहा जाता है । [1]

हाथियों को क्या पान कराया जाए और उन्हें किस लाभ हेतु क्या खिलाया जाए इसके लिए किये जाने वाले उपक्रमों का वर्णन भी इसी क्रम में सविधि किया गया है –

लवणैः पंचभिर्मिश्रा प्रतिपानाय वारूणी ।
विडंगत्रिफलाध्योषसैन्धवैः कवलान्कृतान् ।।
मूर्छासं भोजयेन्नागं क्षौद्रं तोयं च पाययेत् ।
अभ्यंगः शिरसः शूले नस्यं चैव प्रशस्यते ।।
नागानां स्नेहपुटकैः पादरोगानुपक्रमेत् ।
पश्चात्कल्ककषायेण शोधनं च विधीयते ।।
शिखितित्तिरलावानां पिप्पलीमरिचान्वितैः ।
रसः संभोजयेन्नागं वेपथुर्यस्य जायते ।।
बालबिल्वं तथा लोध्र धातकी सितया सह ।
अतीसारविनाशाय पिंडीं भुंजीत कुंजरः ।।
नस्यं करग्रहे देयं घृतं लवणसंयुतम् ।
मागधी नागराजाजी यवागूर्मुस्तसाधिता ।।
उत्कर्णके तु दातव्या वाराहं च तथा रसम् ।
दश मूलकुलत्थाम्लकाकमाचीविपाचितम् ।।
तैलं श्रृंखलसंयुक्तं गलग्रहणगदापहम् ।
अष्टभिर्लवणैः पिष्टैः प्रसन्नं पाययेदधृतम् ।।[2]

अर्थात् पॉचों प्रकार के नमकों से मिश्रित वारूणी प्रतिपान के लिए दी जाय। विडंग, त्रिफला, व्योष और सैन्धव से कवल कराया जाय । नाग (हाथी) को मूर्च्छास खिलवाना चाहिए और क्षौद्र एवं जल पिलवावें । शिर के मूल में अभ्यंग एवं नस्य बहुत अच्छा कहा जाता है । हाथियों के पैर रोगों में स्नेह पुटकों के द्वारा उपक्रम करना चाहिए । इसके अनन्तर कल्क के कषाय से शोधन करने का भी विधान बताया गया है । जिस हाथी को कम्प होता है उसकों मोर, तीतर लावाओं की पिप्पली, मिर्च से युक्त रसों के द्वारा भोजन कराना चाहिए । यदि हाथी को अति सार हो तो उसको नष्ट करने के लिए बालबिल्व लोध और धातकी का मिश्री के साथ पिण्ड बनाकर हाथी को खिलाना चाहिए । करग्रह में लवण से युक्त घृत का नस्य देना चाहिए । मागधी, नागरा अजाजी और मुस्ता नामक घास से साधित यवागू उत्कर्णव में गज को देनी चाहिए । वाराह रस ,दशमूल , कुलत्थ अम्ल और कामकाची के द्वारा विशेष रूप से पकाया हुआ तैल श्रृंखला से युक्त करके प्रयोग तो गलग्रह के रोग का नाशक होता है । आठ प्रकार के लवणों को पीसकर उन्हें भी प्रयोग में लाना चाहिए ।

हाथियों का बल बढाने के लिए बलवर्धक औषधियों का वर्णन भी निर्णयात्मक तरीके से अग्निपुराण में प्रस्तुत किया गया । इनके अतिरिक्त अन्य पशु पक्षियों के शुभाशुभ लक्षण– ज्ञान से सम्बद्ध तथ्य इस प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं –

यवश्चैवं तथैवेक्षु र्नागानां बलवर्धनः ।
नागानां यवसं शुष्कं तथा धातुप्रकोपणम् ।।
मदक्षीणस्य नागस्य पयः पान प्रशस्यते ।
दीपनीयस्तथा द्रव्यैः शृतो मांसरसः शुभः ।।
वायसः कुक्कुरश्चोभौ काकोलूककुलं हरिः ।
भवेत्क्षोद्रेण संयुक्तः पिण्डोद्रेकगदापहः ।।
कटुमत्स्यविडंगानि क्षारः कोषातकीपयः ।
हरिद्रा चेति धूपोऽय कुंजरस्य जयावहः ।।
पिप्पलीतण्डुतीतैलं माध्वीक माक्षिकं तथा ।
नेत्रयोः परिषेकोऽयं दीपनीयः प्रशस्यते ।।
पुरीषं चटकायाश्च तथा परावतस्य च ।
क्षीरवृक्षः करीषश्च प्रसन्नं चेष्टमंजनम् ।।
अनेनांजितनेत्रस्तु करोति कदनं रणे ।
उत्पलानि च नीलानि मुस्तें तगरमेव च ।।
तण्डुलादिकपिष्टानि नेत्रनिर्वापणं परम् ।
नखवृद्धौ नखच्देदस्तैलसेकश्च मास्यपि ।।
शय्यास्थानं भवेच्चास्य करीषैः पांसुभिस्तथा ।
शरन्निदाघयोः सेकः सर्पिषा च तथेष्यते ।। [3]

अर्थात् जौ और ईख हाथियों के बल को बढाने वाले हैं । गजों को यवस शुष्क और धातु को प्रकुपित करने वाला होता है । मद से जो हाथी क्षीण हो गया हो उसको दूध का पान कराना प्रशस्त माना जाता है । दीपन करने वाले द्रव्यों के द्वारा श्रृत मांस का रस लाभप्रद होता है । कौवा कुक्कुर दोनों, काक उलूक और हरिण ये क्षौद्र से संयुक्त हों तो पिंडीद्रेक रोग का नाशक नाश करते हैं । कटु, मत्स्य, विडंग, क्षार कौषीतकी, पय और हल्दी इनके द्वारा बनाया हुआ धूप गज को जय प्रदान करने वाला होता है । पिप्पली और तण्डुली का तैल माष्वीक इनसे नेत्रों में परिषेक दीपनीय होता है और दीपन के लिए प्रशस्त माना जाता है । चटका का पुरीष (मल) तथा पारावत (कबूतर) का पुरीष क्षीर वृक्ष और करीष ये प्रसन्न हों तो इनका अंजन बहुत ही अभीष्ट होता है । इस प्रकार के निर्मित अंजन से अंजित नेत्रों वाला रणभूमि में एक दम कदन अर्थात् संहार किया करता है । नील उत्पल, मुस्त और ततगर इनको तण्डुलोदक के द्वारा पीसकर नेत्रों का निर्वापण करना बहुत लाभप्रद होता है । नखों की वृद्धि होने पर उनका छेदन करके तैल के द्वारा मालिश करना चाहिए । इसके शय्या का स्थान करीष और पॉसु अर्थात् धूलि के द्वारा होना चाहिए । शरद और ग्रीष्म ऋतु में घृत से सेक अभीष्ट होता है ।

अश्व ,वाहन . सार वर्णन :–

धन्वन्तरि के वचन के अनुसार अश्ववाहन का सार और उनकी चिकित्सा के उपायों का वर्णन भी किया गया है । अश्व पालन की आवश्यकता और उसकी सवारी किन ऋतुओं में प्रशस्त है, इसका वर्णन द्रष्टव्य –घोडो का संग्रह करने से धर्मार्थ कामादि की सिद्धि होती है – **वाजिनां संग्रहः कार्यो धर्म कामार्थ सिद्धये ।** [4]

प्रथमबार घोडो की सवारी करने के लिए प्रमुख नक्षत्र अच्छे माने गये हैं –

अश्विनी ,श्रवण ,हस्त और तीनों उत्तरा ।इसी प्रकार हेमन्त ,शिशिर,और बसन्त ये तीनों ऋतुएं भी प्रशस्त मानी गयी हैं।ग्रीष्म,शरद और वर्षा ऋतुएं निषिद्ध हैं –

अश्विनी श्रवणं हस्तमुत्तरात्रितयं तथा ।
नक्षत्राणि प्रशस्तानि हयानामादिवाहने ।।
हेमन्तः शिशिरश्चैव वसन्तश्चाश्ववाहने ।
ग्रीष्मे शरदि वर्षासु निसिद्धं वाहनं हये ।।[5]
अश्वचिकित्सा –
अश्वानां लक्षणं वक्ष्ये चिकित्सां चैव सुश्रुत ।
हीरदन्तो विदन्तश्च करालः कृष्णतालुकः ।।
कृष्णजिह्वश्च यमजोऽजातमुष्कश्च यस्तथा ।
द्विशकश्च तथा श्रृंगी त्रिवर्णो व्याघ्रकर्णकः ।।
खरवर्णोभस्मवर्णो जातवर्णश्च काकदी ।
श्वित्री च काकसादी च खरसारस्तथैव च ।।
वानराक्षः कृष्णसटा कृष्णगुह्यस्तथैव च ।
कृष्णप्रोथश्च शूकश्च यश्च तित्तिरिसंनिभः ।।
विषमः श्वेतपादश्च ध्रवावर्तविवर्जितः ।
अशुभावर्तसंयुक्तो वर्जनीयस्तुरंगमः ।।
रन्ध्रोपरन्ध्रयोर्द्वौ द्वौ मसतकवक्षसोः ।
प्रायेण च ललाटस्थकण्ठावर्ताः शुभा दश ।
सुक्कणयां च ललाटे च कर्णमूले निगालके ।।
बाहुमूले गले श्रेष्ठा आवर्तास्त्वशुभा परे ।
शुकेन्द्रगोपचन्द्राभा ये च वाय ससंनिभाः ।।
सुवर्णवर्णाः स्निग्धाश्च प्रशस्तास्तु सदैव हि ।[6]

उपर्युक्त श्लोकों में शालिहोत्र ने सुश्रुत से अश्वों का लक्षण एवं उनकी चिकित्सा को बताया है । किन्तु प्रमुख रूप से किन – किन लक्षणों वाले अश्वों का ग्रहण और त्याग करना चाहिये, यह बताते है –

1. हीरदन्त अश्व
2. विदन्त – कराल अश्व
3. कृष्णतालु – कृष्णजिह्वा वाला अश्व
4. यमज अजात, मुष्क – द्विशफ श्रृंगी – त्रिवर्ण वाले अश्व
5. व्याघ्र जैसे वर्ण वाला अश्व
6. खर जैसे वर्ण वाले अश्व
7. भष्म के तुल्य वर्ण वाला
8. जातवर्ण – काकदी – श्वितृ काकसादी वानर जैसी ऑखों वाला
9. तितिर के तुल्य – विषम – श्वेतपाद ध्रुवावर्त से रहित और अशुभ आवर्त से युक्त जो अश्व होते है वे अशुभ और ग्रहण न करने के योग्य होते है । इसी प्रकार रन्ध्र, उपरन्ध्र पर दो, मस्तक तथा वक्षस्थल पर दो दो, ललाट और कंठ पर स्थित रहने वाले दस आवर्त शुभ माने जाते है । सृक्किणी, ललाट, कर्णमूल, निगालक, बाहुमूल, और गले में जिन घोड.ों के आवर्त पाये जाते हैं वे श्रेष्ठ और ग्रहणीय होते है । इसी प्रकार शुक इन्द्रगोप और चन्द्रमा जैसे आभा वाले वायस के तुल्य सुवर्ण जैसे वर्ण व चिकने अश्वों को सर्वदा प्रशस्त माना गया है । अश्वों के चिकित्सा के बारे में कतिपय तथ्य इस प्रकार है –

अश्वमेधे तु तुरगः पवित्रत्वात्तु हूयते ।
वृषो निंबबृहत्यौ च गुडूची च समाक्षिका ।।

सिङ्धाणकहरी पिण्डी स्वेदश्च शिरसस्तथा ।
हिंगु पुष्करमूलं च नागरं साम्लवेतसम् ।।
पिप्पलीसैन्धवयुतं शूलघ्नं चोष्णवारिणा ।
नगरातिविषा मुस्ता सानन्ता बिल्वमालिका ।।
क्वाथमेषां पिबेद्वाजी सर्वातीसारनाशनम् ।
प्रियंगुसारिवाभ्यां च युक्तमाजं श्रृतं पयः ।।
पर्याप्तशर्करं पीत्वा श्रमाद्वाजी विमुच्यते ।
द्रोणिकायां तु दातव्या तैलबस्तिस्तुरंगमे ।।[7]

वृष निम्ब वृहती गिलोय माक्षिक के सहित सिङधाण, कहरी पिण्डी तथा शिरका स्वेद हिंगु पुष्करमूल – नागर – अम्ल वेतस पिप्पली सैन्धव से युक्त गर्म पानी के साथ शूल का नाश करते हैं । तगर – अतिविष्ठा – मुस्ता – अनन्त – विल्बमालिका इनका क्वाथ घोड. ा को पिलाया जावे तो सब प्रकार के अतीसार का नाश करते हैं । प्रियंगुसारिवा से युक्त अज श्रृत दुग्ध अच्दी शक्कर से युक्त बनाकर पिलाया जावे तो अश्व श्रम का त्याग करता है अर्थात् अत्यन्त थकान से छूट जाता है । द्रोणिका में घोडे को तैल की वस्ति देना चाहिए ।

गो – लक्षण व चिकित्सा

धनवन्तरि के वचन के अनुसार राजा को गाय और ब्राह्मणों का पालन करना चाहिए । गाय पवित्र और मांगल्य होती है । गौओं से लोक प्रतिष्ठित होते हैं । गौ को गोबर और मूत्र अलक्ष्मी का नाश करने वाला होता है । गायों का खुज लाना, गौओं को जल पिलाना, गौओं के सींगों का मर्दन करना । गौमूत्र, गोबर, दूध, दही, गोघृत और कुशाा का जल ये छः वस्तुऍ है जिनका पान करने से दुःस्वप्न आदि का निवारण होता है । गौ की रोचना से विष तथा राक्षसों से रक्षा होती है । गौ को ग्रास देने वाला स्वर्गगामी होता है। जिनके घर में गौ दुःखित रहा करती है वह नरक गामी होता है। पराई गौ को ग्रास देने वाला स्वर्गगामी होता है और गाय का हित करने वाला ब्रह्मलोक का वासी होता है । गौ दान से तथा गौ के कीर्तन से मनुष्य अपनी रक्षा करता हुआ कुल का उद्धार करता है। गौ के श्वास से यह भूमि परम पवित्र हो जाती है । गाय के स्पर्श करने से पापों का क्षय होता है। गौ मूत्र, गोमय, गोदुग्ध, गोदधि और कुशोदक का पान और एक रात्रि का उपवास को भी शोधित कर दिया करता है । समस्त अशुभों में विनाश करने के लिए पहले समथ पुरूषों ने इनका समाचरण किया है । इन वस्तुओं में से प्रत्येक को तीन दिन तक अभ्यास में लाने में महासान्तपन नामक व्रत का प्रायश्चित बताया गया है । यह समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा सब प्रकार के अशुभों का विमर्दन करने वाला होता है। [8]

गो चिकित्सा सम्बन्धी बातें अग्नि पुराण के 129 वें अध्याय के गवायुर्वेद नामक प्रकरण में बतायी गयी है जिनमें कुछ इस प्रकार है –

पिबन्ति तत्र तत्तीर्थं गंगा गाव एव हि ।
गवां महात्म्यमुक्तं हि चिकित्सां च तथा श्रृणु ।।
श्रृंगामयेषु धेनूनां तैल दद्यात्ससैन्धवम् ।
श्रृंगवेरबलामासीकल्कसिद्धं समाक्षिकम् ।।
कर्णशूलेषु सर्वेषु मंजिष्ठाहिंगुसैन्धवैः ।
सिद्धं तैलं प्रदातव्यं रसोनेनाथ वा पुनः ।।[9]

धेनुओं के सींगों को रोगों में सैन्धव के साथ तेल देना चाहिए । सब से कर्ण शूलों में श्रृंगवेर, बला, मॉसी का माक्षिक के साथ कल्क सिद्ध करे । अथवा मजीठ, हींग, सैन्धव के द्वारा सिद्ध किया हुआ तैल देना चाहिए अथवा रसोन के साथ देवे ।

निष्कर्ष : –

अग्नि पुराण एक ऐसा पुराण है जिसमें न केवल पुराणों के लक्षण के अनुसार विषयो का वर्णन है बल्कि इसमें जहॉ तक पुराणकार की प्रज्ञा कार्य की है, वर्णन करने में कोई पक्ष अछूता नहीं है । चाहें काव्यशास्त्रीय तत्वों की बात हो, परिभाषाओं की बात हो, मन्त्रों का प्रकरण हो, देव प्रतिष्ठा या पूजन – अर्चन के तथ्य हो, मनुष्य के अतिरिक्त पशुओं से सम्बन्धित वे सभी वर्णन उपलब्ध है जिनके आधार पर उचित अनुचित का विवेक स्थापित किया जा सकता है । स्वर्ग – नरक, उत्पत्ति – विनाश आदि भी अग्नि पुराण का वर्ण्य विषय है । देवालय प्रतिष्ठा, देवालय महत्व और यहॉ तक की ब्रह्म ज्ञान निरूपण में भी अग्नि पुराण कम नहीं है । काव्य गुण काव्य शास्त्र में सर्वथा विचारणीय रहे है । सबसे अध्याय में पुराणकार ने काव्य गुणों का वर्णन किया है । शब्द और अर्थ के आश्रित भिन्न – भिन्न काव्य गुण निरूपित किये गये है ।

सन्दर्भ –

1. गजलक्ष्मचिकित्सा च लोमपाद वदामि ते ।
   दीर्घहस्ता महोच्द्वासाः प्रशस्तास्ते सहिष्णवः ।।
   विशत्यष्टादशनखाः शीतकालमदाश्च ये ।
   दक्षिणश्चोन्नतो दन्तो वृंहितं जलदीपमम् ।।
   कर्णो च विपुलो येषां सूक्ष्मविन्द्वन्वितास्त्वचि ।
   ते धार्या न तथा धार्या वामना ये त्वलक्षणाः ।।
   हस्तिन्यः पार्श्वगर्भिण्यो ये च मूढा मतंगजाः ।
   वर्णं सत्वं बलं रूपं कान्तिः संहननं जबः ।।
   सप्तस्थितो गजश्चेदृक्सड. ग्रामेऽरिंजयेत्सदा ।
   कुञ्जराः परमा शोभा शिविरस्य बलस्य च ।।
   आदृतः कुंजरैश्चैव विजयः पृथिवीक्षिता ।
   पाकलेषु च सर्वेषु कर्तव्यमनुवासनम् ।।
   घृततैलाभ्यंगयुक्तं स्नानं वातविवर्जितम् ।
   स्कन्धेषु च क्रिया कार्या तथा पालकवन्नृपैः ।।
   गोमूत्रं पांडुरोगेषु रजनीभ्यां घृतं द्विज ।
   आनाहे तैलसित्तस्य निषेकतस्य शस्यते ।। अग्नि पुराण, द्वितीय खण्ड, अध्याय – 124
2. अग्नि पुराण – अध्याय, 124
3. अग्नि पुराण – अध्याय, 124
4. अग्नि पुराण – अध्याय, 125, अश्ववाहनसार
5. अग्नि पुराण – अध्याय, 125
6. अग्नि पुराण – अध्याय, 126, अश्वचिकित्सा
7. अग्नि पुराण – अध्याय, 126, श्लोक 11–15
8. अग्नि पुराण – अध्याय, 129 गवायुर्वेद
9. अग्नि पुराण – अध्याय, 129 गवायुर्वेद